

रविवार 21 जून, 2026

विषय — मानवासह विश्वाची उत्क्रांती अणुशक्तीने झाली आहे का?

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 4: 20

---

"क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है।"

---

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 44: 8, 21-23, 28

- <sup>8</sup> मत डरो और न भयमान हो; क्या मैं ने प्राचीनकाल ही से ये बातें तुम्हें नहीं सुनाई और तुम पर प्रगट नहीं कीं? तुम मेरे साक्षी हो। क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता॥
- <sup>21</sup> हे याकूब, हे इस्राएल, इन बातों को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे रचा है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है, मैं तुझ को न बिसराऊंगा।
- <sup>22</sup> मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है॥
- <sup>23</sup> हे आकाश, ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है; हे पृथ्वी के गहिरे स्थानों, जयजयकार करो; हे पहाड़ों, हे वन, हे वन के सब वृक्षों, गला खोल कर ऊंचे स्वर से गाओ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल में महिमावान होगा॥
- <sup>28</sup> जो कुसू के विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा; यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जाएगी और मन्दिर के विषय कि तेरी नेव डाली जाएगी॥

पाठ उपदेश

## बाइबल

### 1. मत्ती 23: 9 (पुकारना)

<sup>9</sup> ...और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।

### 2. यहजेकेल 1: 3 (से 1st ), 1 (स्वर्ग), 4, 28 (यह)

<sup>3</sup> यहोवा का वचन बूजी के पुत्र यहजेकेल याजक के पास पहुचा; और यहोवा की शक्ति उस पर वहीं प्रगट हुई।

<sup>1</sup> ... तब स्वर्ग खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाए।

- 4 जब मैं देखने लगा, तो क्या देखता हूँ कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा, और लहराती हुई आग सहित बड़ी आंधी आ रही है; और घटा के चारों ओर प्रकाश और आग के बीचों-बीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है।
- 28 जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था। यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था। और उसे देख कर, मैं मुंह के बल गिरा, तब मैं ने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है।

### 3. यहजकेल 2: 2-6, 8 (से :)

- 2 जैसे ही उसने मुझ से यह कहा, त्योंही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया; और जो मुझ से बातें करता था मैं ने उसकी सुनी।
- 3 और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात् बलवा करने वाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिल तक मेरा अपराध करते चले आए हैं।
- 4 इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज और हठीले हैं;
- 5 और तू उन से कहना, प्रभु यहोवा यों कहता है, इस से वे, जो बलवा करने वाले घराने के हैं, चाहे वे सुनें व न सुनें, तौभी वे इतना जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है।
- 6 और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से न डरना; चाहे तुझे कांटों, ऊंटकटारों और बिच्छुओं के बीच भी रहना पड़े, तौभी उनके वचनों से न डरना; यद्यपि वे बलवई घराने के हैं, तौभी न तो उनके वचनों से डरना, और न उनके मुंह देख कर तेरा मन कच्चा हो।
- 8 परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ, उसे तू सुन ले, उस बलवई घराने के समान तू भी बलवई न बनना; जो मैं तुझे देता हूँ, उसे मुंह खोल कर खा ले।

### 4. यहजकेल 34: 1, 2, 4, 5, 6 (और कोई नहीं), 9, 12, 14 (से :), 25 (से :), 26 (से ;), 30 (से 1st ,)

- 1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
- 2 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यद्वक्ताणी कर के उन चरवाहों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हाय इस्राएल के चरवाहों पर जो अपने अपने पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को भेड़-बकरियों का पेट न भरना चाहिए?
- 4 तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न घायलों के घावों को बान्धा, न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिकार चलाया है।
- 5 वे चरवाहे के न होने के कारण तितर-बितर हुई; और सब वनपशुओं का आहार हो गई।
- 6 मेरी भेड़-बकरियां तितर-बितर हुई हैं; वे सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़-बकरियां सारी पृथ्वी के ऊपर तितर-बितर हुई; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उन को ढूंढता था।
- 9 इस कारण हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो,
- 12 जैसे चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों में से भटकी हुई को फिर से अपने झुण्ड में बटोरता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़-बकरियों को बटोरूंगा; मैं उन्हें उन सब स्थानों से निकाल ले आऊंगा, जहां जहां वे बादल और घोर अन्धकार के दिन तितर-बितर हो गई हों।

- 25 मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा, और दुष्ट जन्तुओं को देश में न रहने दूंगा; सो वे जंगल में निडर रहेंगे, और वन में सोएंगे।
- 26 और मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आस पास के स्थानों को आशीष का कारण बना दूंगा; और मेंह को मैं ठीक समय में बरसाया करूंगा; और वे आशीषों की वर्षा होंगी।
- 30 और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा, उनके संग हूँ।

**5. यूहन्ना 8: 1, 2, 12 (कह रहा), 28 (मैं करता हूँ), 29**

- 1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
- 2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
- 12 ... तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
- 28 और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।
- 29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिस से वह प्रसन्न होता है।

**6. यूहन्ना 10: 7 (सचमुच), 9 (द्वारा), 10 (मैं), 14-16, 27-30**

- 7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ।
- 9 ...द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।
- 10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।
- 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ।
- 15 इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।
- 16 और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।
- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
- 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
- 29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
- 30 मैं और पिता एक हैं।

**7. मत्ती 25: 34 (आना)**

- 34 हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।

**8. 1 पतरस 5: 2 (से 1st ;), 3, 4**

- 2 कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर।
- 3 और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।
- 4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 361: 16-18

जैसे पानी की एक बूंद सागर के साथ एक है, रोशनी की एक किरण सूरज के साथ एक है, वैसे ही भगवान और इंसान, पिता और बेटा, एक हैं।

### 2. 63: 5 (मं)-11

विज्ञान में मनुष्य आत्मा की संतान है। सुंदर, अच्छा और शुद्ध उसके वंश का गठन करते हैं। उसका मूल, नश्वर की तरह, पाशविक वृत्ति में नहीं है, और न ही वह बुद्धि तक पहुँचने से पहले भौतिक परिस्थितियों से गुजरता है। आत्मा उसका मूल और होने का परम स्रोत है; परमेश्वर उसका पिता है, और जीवन उसके होने का नियम है।

### 3. 467: 3 (यह)-16

इस विज्ञान की पहली मांग है, "दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" यह "मैं" आत्मा है। इसलिए आज्ञा का यह अर्थ है: आपके पास कोई बुद्धि नहीं है, कोई जीवन नहीं है, कोई पदार्थ नहीं है, कोई सत्य नहीं है, कोई प्रेम नहीं है, इसके अलावा जो आध्यात्मिक है। दूसरा उसके जैसा है, "तू अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम रखना।" यह अच्छी तरह समझा जाना चाहिए कि सभी पुरुषों का एक मन, एक ईश्वर और पिता, एक जीवन, सत्य और प्रेम होता है। यह तथ्य स्पष्ट होते ही मानव जाति अनुपात में परिपूर्ण हो जाएगी, युद्ध बंद हो जाएगा और मनुष्य का सच्चा भाईचारा स्थापित हो जाएगा। कोई अन्य देवता नहीं, कोई दूसरा नहीं, बल्कि एक ही मार्गदर्शक का मन, मनुष्य ईश्वर की समानता है, शुद्ध और शाश्वत है, और उसके पास वह मन है जो मसीह में भी था।

### 4. 26: 10-18

मसीह आत्मा था जिसे यीशु ने अपने बयानों में निहित किया था: "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ;" "मैं और पिता एक हैं।" यह मसीह, या यीशु की दिव्यता, उसकी दिव्य प्रकृति थी, जो उसे अनुप्राणित करती थी। ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

### 5. 25: 13-21

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यीशु ने ईश्वर के आदर्श को किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में बेहतर प्रस्तुत किया जिसकी उत्पत्ति कम आध्यात्मिक थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया। अतः उसके पालन की शक्ति, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

## 6. 124: 14-31

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

आसंजन, सामंजस्य और आकर्षण मन के गुण हैं। वे दिव्य सिद्धांत से संबंधित हैं, और उस विचार-शक्ति के उपसंहार का समर्थन करते हैं, जिसने पृथ्वी को अपनी कक्षा में लॉन्च किया और गर्व की लहर से कहा, "यहां तक और इसके आगे नहीं।"

आत्मा सभी चीजों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है। हम ताकतों पर चलते हैं। उन्हें वापस ले लें, और सृजन को ढह जाना चाहिए। मानव ज्ञान उन्हें पदार्थ की ताकत कहता है; लेकिन दिव्य विज्ञान घोषित करता है कि वे पूर्ण रूप से दिव्य मन से संबंधित हैं, इस दिमाग में निहित हैं, और इसलिए उन्हें उनके सही घर और वर्गीकरण के लिए पुनर्स्थापित करता है।

## 7. 335: 25 (दिमाग)-29

मन दिव्य सिद्धांत है, प्रेम, और यह शाश्वत पिता-माता, ईश्वर के विपरीत कुछ भी पैदा नहीं कर सकता। वास्तविकता आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण, अपरिवर्तनीय, अमर, दिव्य, शाश्वत है। कोई भी अध्यात्मपूर्ण चीज़ वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण, या शाश्वत नहीं हो सकती।

## 8. 276: 17-28

यदि परमेश्वर को केवल मन और जीवन माना जाता है, तो पाप और मृत्यु के लिए कोई अवसर होना बंद हो जाता है। जब हम विज्ञान में सीखते हैं कि स्वर्ग में हमारे पिता भी कैसे परिपूर्ण हैं, तो विचार को नए और स्वस्थ चैनलों में बदल दिया गया है, - सामंजस्यपूर्ण मनुष्य सहित ब्रह्मांड के सिद्धांत के लिए अमरता और भौतिकता से दूर चीजों के चिंतन की ओर।

भौतिक विश्वास और आध्यात्मिक समझ कभी मेल नहीं खाते। उत्तरार्द्ध पूर्व को नष्ट कर देता है। कलह त्रुटि नाम की शून्यता है। समरसता ही वह चीज़ है जिसका नाम सत्य है।

## 9. 302: 15 (सामंजस्यपूर्ण)-25

...सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है। यह कथन तथ्य पर आधारित है, काल्पनिक नहीं। मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो

सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

ईश्वर प्रेम है।

## 10. 518: 13-23

ईश्वर स्वयं का विचार देता है, अधिक के लिए कम करने के लिए, और बदले में, उच्च हमेशा कम की रक्षा करता है। सभी को एक ही सिद्धांत, या पिता, को एक भव्य भाईचारे में रखते हुए, आत्मा में समृद्ध गरीबों की मदद करते हैं। और धन्य है वह आदमी जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई जानता है, अपने भाई की आवश्यकता को देखता है और उसकी आपूर्ति करता है। प्रेम कमजोर आध्यात्मिक को, अमरता, और अच्छाई देता है, जो सभी के माध्यम से चमकता है जैसे कि कली के माध्यम से खिलता है। ईश्वर की सभी विविध अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता, अमरता - अनंत जीवन, सत्य और प्रेम को दर्शाती हैं।

## 11. 469: 30-5

एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है।

## 12. 442: 27 ("डर)-29

"हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।" यह सत्य क्रिश्चियन साइंस है।

### दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6